॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुꣳश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय रेभम्। नरिष्ठाये भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्। शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय श्वनितम्॥३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्। आर्त्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्। प्रयुद्भ्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो व्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवेभ्यः कितवम्। इर्यतायाअकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥५॥

उथ्सादेभ्यः कुब्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वार्भ्यः स्रामम्। स्वप्नायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्निनम्। उपशिक्षायाअभिप्रश्निनम्। मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्। औपद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वाहारम्। प्रभायाआग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवर्त्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायाश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्। तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्।

कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्। निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवथ्सराय पर्यारिणीम्। परिवथ्सरायाविजाताम्। इदावथ्सरायापस्कद्वरीम्। इद्वथ्सरायातीत्वरीम्। वथ्सराय विजर्जराम्। संवथ्सराय पलिक्नीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो बैन्दम्। नड्वलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्। ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मम्णम्॥१३॥

बीभत्स्यायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्घोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्ध्या अपगल्भम्। सꣳशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुꣳश्चलूमा लभते। वीणावादं गणकं गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय भद्रवतीम्। तूणवध्मं ग्रामण्यं पाणिसङ्घातं नृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय तलवम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया आदिनवदर्शम्। द्वापराय बहिःसदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं माꣳसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽꣳसलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्। अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानं व्यानमुदानꣳ समानं तान् वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्। प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथै॒तानरू॑पेभ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्। अति॑कृश॒मत्य॑ꣳसलम्। अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒मति॑लोमशम्। अति॑किरिट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मिर॒मति॑मेमिषम्। आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॒ श्रमा॑य स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उथ्सा॒देभ्य॒ ऋत्यै॒ भाया॒ अमे॑भ्यो म॒न्यवे॑ य॒म्यै॑ दश॑दश॒ सरो॑भ्यो॒ द्वाद॑श प्रति॒श्रुत्का॑यै बीभ॒थ्साये॒ दश॑दश॒ हसा॑य स॒प्ताक्ष॑रा॒जाय॒ त्रयो॑दश॒ भूम्यै॒ दश॑ वा॒चे षडथ॒ नवैका॒न्नविꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै॑ नव॑दश॥१९॥

ब्रह्म॑णे कुमा॒रीम्॥

हरिः॑ ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

generated on **February 28, 2025**

Downloaded from

http://stotrasamhita.github.io | StotraSamhita | Credits